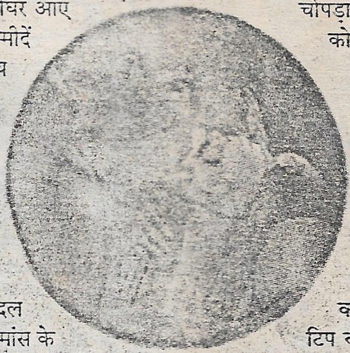
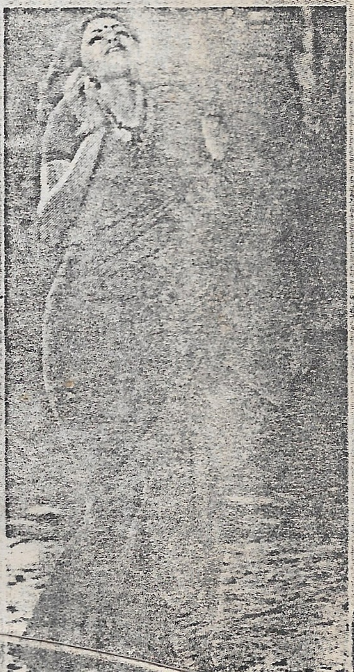
तीसरा विश्व युद्ध पानी के मुद्दे पर होगा। इस भविष्यवाणी को लेकर पूरी दुनिया में चौकसी शुरू हो गई है, लेकिन लगता है कि हिंदी सिनेमा एक अकेला ऐसा उदाहरण होगा, जहां 'प्यास' की बजाय 'प्यार' की चिंता ज्यादा है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि फिल्म इंडस्ट्री के सारे लोग पानी के वैश्विक संकट को महसूस नहीं कर पा रहे हैं, लेकिन अधिकांश जान बूझकर आंखें बंद किए हुए हैं कि कहीं प्यार का इजहार करने या रोमांस को ग्लैमराइज करने का पनीला तरीका हाथ से निकल न जाए। इस समय आशुतोष गोवारीकर- आमिर खान की 'लगान' ही थी, जिसमें पानी को जिंदा रहने की जरूरत के रूप में दिखाया गया। 'घनन घनन घन घिर आए बदरा...' में किसानों की आंखों में जो उम्मीदें दिखाई जाती हैं, ऐसी ही उम्मीद विजय आनंद की फिल्म 'गाइड' में दिखाई गई थी। 'मदर इंडिया' में भी पानी के संकट की व्यावहारिक व्याख्या की गई थी। एम एस सथ्यू ने 'सूखा' तथा इधर की फिल्म 'अग्निवर्षा' को उसी संदर्भ में पेश किया था।



फिल्मों में तकनीकी विकास दिन-ब-दिन निखरता जा रहा है। कहानी बदल रही है, चरित्र बदल रहे हैं। प्यार और रोमांस के रूप भी बदल रहे हैं। रोमांस से मधुरता और कोमलता धीरे-धीरे गायब हो रही है। प्रेमी-प्रेमिकाओं के छिप-छिप कर मिलने और 'आई लव यू' कहने में महीनों लग जाने का रोमानीपन भी अब देखने को नहीं मिल रहा है। सब कुछ समय के अनुसार बदलता जा रहा है, मगर जो कुछ नहीं बदला है, वह बरसात, मेघ, समन्दर, नदी, ताल, बर्फीली पहाड़ी है। सारी आधुनिकताओं के बावजूद फिल्मों में बरसात, प्यार और रोमांस के क्षणों की आज भी न केवल प्रतीक बनी हुई है, बल्कि सम्मोहन का मंत्रगान भी कर रही है।

'एक लड़की भीगी भागी सी, सोई रातों में जागी सी...' (चलती का नाम गाड़ी) आज भी अद्भुत रोमांस का क्षण सृजित करता है। इसमें किशोर कुमार की चुहलबाजी में मधुबाला की मोहक अदा का साथ देखने लायक था। उस क्षण को 'रिमझिम रिमझिम, रुनझुन रुनझुन, भीगी भीगी रुत में तुम हम, हम तुम...' (1942: ए लव स्टोरी) और भी रोमानी बना डालता है। 'रिमझिम गिरे सावन, उलझ उलझ जाए मन...' (मंजिल) अत्यंत प्यार को व्यक्त करने का अच्छा बहाना बन गया था। देव आनंद और वहीदा रहमान का 'काला बाजार' में एक ही छतरी के नीचे गाया 'रिमझिम के तराने लेकर आई बरसात, याद आई किसी से वह पहली मुलाकात...' ने प्यार को खुलने का जिस तरह का मौका दिया था, वह संवादों से संभव नहीं था। अधिकांश फिल्मों में बरसात के आने का मतलब ही यही लगाया जाता है कि कोई गाना आएगा या हीरो-हीरोइन अपने रिलेशनशिप को देहगाथा में बदलेंगे। समंदर किनारे उनका टहलना, झील में बोट पर सवार होना या बर्फ पर स्कीइंग करना- रोमानीपन के ही सबूत हैं। अभी तक यही कहा जाता है कि बारिश में सबसे ज्यादा गाने अमिताभ बच्चन ने गाए हैं और निर्देशकों में राज कपूर के बाद यश चोपड़ा उन लोगों में अग्रणी हैं, जो रोमांस को फिल्माने के लिए बारिश को एक खूबसूरत माध्यम मानते हैं। 'दिल तो पागल है' में शाहरुख खान और माधुरी दीक्षित पर फिल्माया 'कोई लड़की है... जब वो हंसती है बारिश होती है....' बेमिसाल साबित हुआ।





'दूर रहकर न करो बात करीब आ जाओ, जान ले लेगी ये बरसात करीब आ जाओ...' (अमानत), 'टिप टिप बरसे पानी, पानी में आग लगाए...' (मोहरा), 'अब के सावन में जी डरे, रिमझिम बरसे पानी गिरे...' (जैसे को तैसा), 'जिंदगी भर नहीं भूलेंगे वो बरसात की रात...' (बरसात की रात), 'सावन का महीना पवन करे शोर...' (मिलन) आदि अनेक गीतों ने बरसात और सावन को उसका अपना चेहरा दिखाया है। सच तो यह कि कई नायिकाओं को बनाने में इसी बारिश का योगदान रहा है। वहीं से वे सेक्स और ग्लैमर का प्रतीक बनकर उभरी हैं। सीन चाहे बारिश का हो या स्वीमिंग पूल का, समंदर में मचलने का हो या फिर नदी में नहाने का- इसमें अंग-प्रदर्शन की पूरी-पूरी आजादी होती है।

राज कपूर ने 'बोल राधा बोल संगम होगा या नहीं...' में या 'श्री 420' में 'प्यार हुआ इकरार हुआ...' या फिर 'बरसात में, तुमसे मिले हम हमसे मिले तुम' (बरसात) में वैजयंती माला और नरगिस की सुंदरता को जिस तरह परोसा था, उसका आज भी कोई जवाब नहीं है। 'बाबी' में डिंपल को बिकनी पहनाकर जिस तरह नदी में उतारा था, वह हॉट सीन बन गया था। 'सत्यम शिवम सुंदरम' में जीनत की देह के दर्शन खूबसूरती से कराए गए, लेकिन राज कपूर की एक फिल्म 'जागते रहो' भी थी, जिसमें नायक पानी की प्यास बुझाना चाहता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में नायिका नरगिस पानी पिलाकर नायक राज कपूर की प्यास बुझाती है। पानी की

आने वाली फिल्में
गंगा जल
इश्क समंदर
पानी
डिब्बाबंद फिल्म
वाटर

पानी से संबंधित प्रमुख फिल्मों के नाम- बारिश, दो बूंद पानी, ब...
गंगा की लहरें, गंगा की सौगंध, जिस देश में गंगा बहती है

खोज के बहाने समाज के असली चेहरे को सामने लाने में फिल्म कामयाब हो जाती है। राज कपूर के लिए पानी सेक्स और ग्लैमर ही नहीं था, वह समस्याओं को दिखाने का एक माध्यम भी था। 'राम तेरी गंगा मैली' को इन दोनों सांचों में ढाला गया था। इसके पहले 'जिस देश में गंगा बहती है' में डाकू- समस्या को उठाया गया था। कहना न होगा कि फिल्मों में सीन को प्रभावी बनाने के लिए भी बारिश, नदी, समुद्र आदि का इस्तेमाल किया जाता रहा है। 'मधुमती' में अगर वैजयंती माला की गाड़ी खराब नहीं होती तो यह पर्दा उठना संभव नहीं होता कि पिछली ज़िंदगी भी कुछ होती है। 'वो कौन थी' में भी मनोज कुमार की गाड़ी बरसात में खराब हो जाती है और

फिल्मों नें तकनीकी विकास दिन-ब-दिन निखरता जा रहा है। कहानी बदल रही है। चरित्र बदल रहे हैं। प्यार और रोमांस के रूप भी बदल रहे हैं। सबकुछ समय के अनुसार बदलता जा रहा है, मगर जो कुछ नहीं बदला है, वह है फिल्मों की बरसात...

में कुछ समाए, आया प्यार भरा मौसम सुहाना...' (हमजोली), 'छुप गए सारे नजारे हाए क्या बात हो गई, हमने चुनरी लहराई बरसात हो गई...' (दो रास्ते), 'रिमझिम के गीत सावन गाए, हाय भीगी भीगी रातों में...' (अनजान), 'छतरी न खोल बरसात में...' (गोपी किशन), 'ठंडी हवा काली घटा, आ ही गई झूम के... ' (मिस्टर एण्ड मिसेज), 'अब के सजन सावन में...' (चुपके चुपके) जैसे गीतों का ही बोलबाला रहा? किसानों के गीत, जमीन के गीत, फसलों के गीत को जगह नहीं दिए जाने का कारण क्या हो सकता है? हिंदी फिल्मों के इतिहास का ऐसा कोई सिरा नहीं है, जो यह साबित कर सके कि उसने खाली घड़ों की भाषा कभी मुकम्मल ढंग से बोली हो। सूखी बावड़ियां, गंदी होती नदियां, गिरता जल स्तर, घटता पानी और बढ़ती प्यास- यह सब हमारी सभ्यता के डूबते जाने की पहचान है। यही समय है जब 'पानी' की समस्या को फिल्मकार कद्र के साथ उतार सकते हैं। अगर कोई एक भी तैयार हो जाए तो संभव है उसके बाद वैसी फिल्मों की बाढ़ ही आ जाए। भेड़चाल कभी-कभी अच्छा परिणाम भी देती है। किसी महेश भट्ट को

नी... रे पानी तेरा रंग कैसा

साधना एक आत्मा के रूप में अवतरित होती हैं। पिछले दिनों रामसे ब्रदर्स की फिल्म 'धुंध- द फाग' में लाश एक स्वीमिंग पूल के अंदर छिपाई जाती है और गायब भी हो जाती है। यानी रहस्य का खेल यहीं आकर और भी गहरा जाता है।

बी आर चोपड़ा की फिल्म 'धुंध' में पूरी कहानी धुंध में ही चलती रह जाती है। इसी तरह की एक और फिल्म बनी थी 'कोहरा'। उसमें वहीदा पर फिल्माया 'झूम झूम बरसे रात...' काफी लोकप्रिय हुआ था। 'पाकीजा' का वह दृश्य आज भी सबको याद है, जब बारिश की रात में राज कुमार ट्रेन की उस बोगी में चढ़ जाते हैं, जहां मीना कुमारी बैठी हुई हैं। 'काजल' का मध्यांतर पानी पर ही होता है, जब मीना कुमारी नदी में कूदकर जान देने चली जाती हैं। राज कुमार उन्हें बेहोशी की हालत में उठाकर लाते हैं। 'एक दूजे के लिए' में तो समंदर छाया हुआ है। कमल हासन और रति अग्निहोत्री के प्रेम का साक्षी है समंदर, मगर उसी में कूदकर दोनों जान भी दे देते हैं। धुंध, बरसात, नदी, समुद्र फिल्मों की कहानी की मुख्यधारा में शामिल हैं। चाहे कथानक को आगे बढ़ाने की बात हो या प्रेम को पुख्ता करने की या गानों को हिट कराने की- पानी उसमें मददगार होता है। बादलों ने धरती के साथ विश्वासघात करना क्यों शुरू कर दिया है, किसानों के सपनों को तोड़ने में कौन-कौन लोग शामिल हैं, आखिर क्यों लोग बड़े-बड़े शहरों की तरफ भाग रहे हैं- इस पर फिल्में क्यों नहीं बन रही हैं? क्यों 'हाए रे हाए मस्त घटा छाए, दिल



फिल्म *लगान* में पानी को जिंदा रहने की जरूरत के रूप में दिखाया गया है...

खड़ा होना होगा, तब रामगोपाल वर्मा भी खड़े होंगे। अन्यथा ऐसा न हो कि अब से पचास साल बाद मुंबई वासी यमुना को देखकर, इलाहाबाद वाले गंगा को देखकर और उत्तर बिहार वाले कोशी को देखकर कहने लगें कि 'यहीं कहीं थी एक नदी और कलकल बहता था पानी।'

■ आनंद भारती

त, बरसात की रात, झील के उस पार, नदिया के पार, आया सावन झूम के, सावन की घटा, सावन भादो, सावन को आने दो, ...गा तेरा पानी अमृत, राम तेरी गंगा मैली, भीगी रात, जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली, गंगा जमुना सरस्वती, सागर